शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल

जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य में ग्रामीण जीवन

भोजराज बारस्कर (शोधार्थी)
डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे (निर्देशक)
महाराजा रणजीत सिंह कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल साईंसेस
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य में ग्रामीण जीवन विविध विधाओं के माध्यम से हमारे समक्ष उपस्थित होता है। काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध और एकांकी आदि विधाओं के माध्यम से ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों से हम परिचित होते हैं। ग्रामीण जीवन के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि संदर्भों से रूबरु होने का एक माध्यम काव्य विधा भी है। आज वैश्वीकरण एवं बाजारीकरण का प्रभाव महानगरों के साथ ग्रामीण जीवन पर भी पड़ रहा है। शहरों की तरह ग्रामीण जीवन में भी बदलाव आया है। गाँव भी शहरों में तब्दील हो रहे हैं। समय के साथ प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से बदलाव आ रहा है। साहित्य का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। साहित्य की विभिन्न विधाओं में काव्य विधा महत्वपूर्ण मानी जाती है। चूंकि कविता मूलतः मनुष्य की संवेदना से जुड़ती है। कविता में युगीन परिवेश के साथ विविधता भी रही है। काल के अनुरूप मनुष्य बदलता रहा है। इसी बदलते हुए परिवेश का चित्रण आज की कविता में हो रहा है। इक्कीसवीं सदी में लिखित ग्रामीण जीवन की कविताएँ मानवीय जीवन के बदलते हुए संदर्भों को अधोरेखित करती है। आज के हिन्दी कवियों ने मनुष्यों के सुख-दुःख के अतिरिक्त बाजारीकरण एवं भूमंडलीकरण की दुनिया में ग्रामीण जीवन और आम-आदमी की स्थिति को महत्व दिया है। विशेष रूप से वस्तुओं की अपेक्षा मनुष्य की संवेदना महत्वपूर्ण रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य में ग्रामीण जीवन पर विचार किया गया है।

व्यक्तित्व-कृतित्व

जितेन्द्र श्रीवास्तव का जन्म 8 अप्रैल, 1974, में उ.प्र. के देवरिया जिले की रुद्रपुर तहसील के एक गाँव सिलहटा में हुआ। आपने बी.ए. तक की पढ़ाई गाँव और गोरखपुर में तथा जे.एन.यू., नई दिल्ली से हिन्दी में एम.ए., एम.फिल. प्रथम स्थान में उत्तीर्ण किया। उसके बाद हिन्दी में पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। आपकी जीविका का साधन अध्यापन है। आपके कार्यक्षेत्र पहाड़, गाँव, और अब महानगर है। आप राजकीय महाविद्यालय बलुवाकोट, धारचूला (पिथौरागढ़), राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी और आचार्य नरेन्द्रदेव किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बभनान गोण्डा (उ.प्र.) में अध्यापन के पश्चात इन दिनों इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के मानविकी विद्यापीठ में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

प्रकाशित कृतियाँ : 'इन दिनों हालचाल','अनभै कथा','असुंदर सुंदर','बिल्कुल तुम्हारी तरह','कायांतरण' (कविता-संग्रह), 'भारतीय समाज की समस्याएँ और प्रेमचंद','भारतीय राष्ट्रवाद और प्रेमचंद','शब्दों में समय','आलोचना का मानुष-मर्म (आलोचना), प्रेमचंद: स्त्री-जीवन की कहानियाँ',' प्रेमचंद: दलित जीवन की कहानियाँ',' प्रेमचंद: स्त्री और दलित विषयक विचार',' प्रेमचंद: हिंदू-मुस्लिम एकता संबंधी कहानियाँ और विचार'

(सभी भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से शीघ्र प्रकाश्य) (संपादन), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित 'गोदान','रंगभूमि','ध्रुवस्वामिनी की भूमिकाएँ लिखी हैं। हिन्दी के साथ-साथ भोजपुरी में भी लेखन-प्रकाशन। कुछ कविताएँ अंग्रेजी, मराठी, उर्दू, उड़िया और पंजाबी में अनूदित। लंबी कविता 'सोनचिरई' की कई नाट्य प्रस्तुतियाँ।

पुरस्कार-सम्मान : हिन्दी अकादमी, दिल्ली का कृति सम्मान, उ.प्र. हिन्दी संस्थान का रामचंद्र शुक्ल पुरस्कार, भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार, उ.प्र. हिन्दी संस्थान का विजयदेवनारायण साही पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता का युवा पुरस्कार, डॉ.रामविलास शर्मा आलोचना सम्मान और परंपरा ऋतुराज सम्मान।

समकालीन कविता की युवा पीढ़ी में जितेन्द्र श्रीवास्तव का नाम अति परिचित और चर्चित है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में जितेन्द्र की कविताएँ प्रकाशित होती आ रही हैं। उनकी कविताएँ प्रकाशित होकर अलक्षित नहीं रहतीं, बल्कि पढ़ी जाती हैं, चर्चित होती हैं और प्रशंसित भी। जितेन्द्र की पहली कविता पुस्तिका 'इन दिनों हालचाल' 1993 में प्रकाशित हुई थी। दिनेश श्रीनेत ने अपने चयन और संपादन से 'इन दिनों हालचाल' को 2011 में पुस्तकाकार रूप प्रदान किया। दो दशकों से भी अधिक अवधि से जितेन्द्र काव्य-सृजनरत हैं। अब तक पाँच कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं - अनभै कथा (2003), असुन्दर सुन्दर (2008), इन दिनों हालचाल (2011), बिल्कुल तुम्हारी तरह (2011) और 'कायांतरण (2012)। इन पाँचों संग्रहों की कविताओं ने हिन्दी के पाठकों, विद्वानों, आलोचकों और सहृदयों का ध्यान आकर्षित किया है। इनकी कविताओं में जीवन की विडंबनाओं का चित्रण मिलता है। साथ ही, श्रम और सौन्दर्य का अद्भुत समन्वय भी। आत्मसंघर्ष भी चित्रित होता है।

जितेन्द्र श्रीवास्तव के 'अनभै कथा' समकालीन सभ्यता और संस्कृति से ही संबंधित नहीं हैं, बल्कि लोक-जीवन के सतरंगी बिंब प्रस्तुत करती है। लोक-जीवन का जितेन्द्र की कविताओं में विविधता के साथ चित्रण मिलता है। लोक के विभिन्न रूपों की मौजूदगी है। कवि की देशजता उसकी विशिष्टता की पहचान है। 'बिल्कुल तुम्हारी तरह' जितेन्द्र की प्रेम-कविताओं का संग्रह है, लेकिन यह प्रेम के मार्फत उन मानवीय संबंधों का अन्वेषण भी जिन्हें हमारे पारम्परिक या सामाजिक नाते-रिश्तों के दायरे में नही समेटा जा सकता है। इस दृष्टि से संकलन की कविताओं का विशेष महत्व है। समकालीन हिन्दी कविता के युवा कवि-आलोचक जितेन्द्र श्रीवास्तव का नव्य काव्य-संकलन 'कायांतरण' अपने समय से टकराते हुए समय के वृहत्तर सच को बयान करता है। 'कायांतरण' मात्र एक काव्य-संकलन न होकर, एक दस्तावेज है- अपने समय को करीब से देखने, परखने, जानने और समझने का ! नाउम्मीदी के इस दौर में उम्मीद को बचाए रखना जितेंद्र की सर्वप्रमुख विशेषता है। कवि 'कायांतरण' में बड़ी शिद्दत से अपनी स्त्री-दृष्टि को स्पष्ट करते हैं। जितेन्द्र की कविताएँ हमे निराश नहीं करतीं, आशाओं और प्रबल संभावनाओं से भरती हैं। उनकी कविताएँ वर्तमान की विसंगतियों को सामने लाती हैं, तो भविष्य की संभावनाओं के द्वार भी खोलती है। जितेन्द्र श्रीवास्तव ने गाँव, शहर, कस्बा, महानगर में रहकर वहाँ के जन-जीवन से जुड़कर जो अनुभव प्राप्त किया है, उसे अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया। जीवन के विविध संदर्भों और परिप्रेक्ष्यों, उनकी जटिलताओं और विडंबनाओं, सुख और दुःख की

स्थितियों, अंधेरे और उजले चित्रों आदि को रचनाकार ने कविता का विषय बनाया है।

प्रगतिशील चेतना के कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में मानवीय संवेदना, प्रखर यथार्थबोध और शोषित व्यक्ति के प्रति गहरा लगाव दिखाई पड़ता है। कवि जितेन्द्र की कविताओं में ग्रामीण जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण मिलता है, किसान जीवन में प्रयुक्त होने वाले तमाम उपकरण हैं, अतः उनकी कविताओं में किसान-चेतना भी देखी जा सकती है। युगीन भयावहता में किसान जीवन की करूण गाथा जितेन्द्र की कई कविताओं में चित्रित हुई है। किसान चेतना के माध्यम से जितेन्द्र केवल आर्थिक संदर्भ की चिंता प्रकट नहीं कर रहे होते हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को भी स्थापित करते हैं।

काव्य में ग्रामीण जीवन के विविध आयाम

आज के दौर का यह सच है कि सम्पन्नता बढ़ने के साथ ही लोगो के बीच आत्मीयता घटने लगी है। जहाँ शहरों में एक ओर रिश्तों में कमी आ रही है, पडोस में ही लोग एक दूसरे को नहीं जानते न ही पहचानते हैं। वहीं गाँव में भी छोटी-छोटी बात को लेकर लोगों के बीच खून -खराबा होने लगा है, जिससे एक-दूसरे के प्रति आत्मीयता के भावों में कमी आने लगी है। हमारे पास दूसरे से मिलने-जुलने या बतियाने का समय नहीं है। अपने में ही मस्त होते जा रहे हैं। गाँव-शहर सभी बदलते जा रहे हैं-

"अब गाँवों में भी
आने-दाने की लड़ाई है
इंच-इंच के लिए खून-खराबा है
रोशनी के बीच शहरों में
जितना अधिक है रिश्तों का अँधेरा
उससे कम नहीं अब
अँधेरे गाँवों में मन का अंधेरा।"1

जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य में ग्रामीण जीवन की किसान-चेतना में महिलाओं की दयनीय स्थिति भी देखने को मिलती है। ग्रामीण महिलाओं का बड़ा ही संघर्षपूर्ण जीवन है, वे खेत-खलिहान, घर-बाहर का सभी कार्य करती हैं, किन्तु उनकी इच्छाओं, आकांक्षाओं को कोई महत्व नहीं देता न ही उन पर किसी का ध्यान जाता है, इसलिए वे महिलाएँ शोषण का शिकार होती रहती हैं। वे विलाप करती हैं अपनी सखियों के साथ कि समाज में उनका कोई अस्तित्व नहीं है। किसान-पत्नी के जीवन का वर्णन करते हुए जितेन्द्र श्रीवास्तव लिखते हैं-

"वे औरतें कभी रोपती हैं धान
कभी काटती हैं गेहूँ
कभी करती हैं सोहनी
कभी उठाती हैं गारा-माटी
और कभी-कभी बिलखती हैं सखियों संग
अपने होने को लेकर।"2

ग्रामीण जीवन का मुख्य व्यवसाय है-कृषि। कृषि के लिए पानी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि पानी नहीं तो किसानों के लिए भूमि का कोई महत्व नहीं है। किसानांे को अपने खेत-खलिहान से बड़ी उम्मीद रहती है, भरण-पोषण की, जीवन-यापन की और उन बादलों की जिसमें खेती का प्राण तत्व रूपी जल समाया हुआ है। परंपरा के साथ संबंध स्थापित करते हुए कवि ने ग्रामीण यथार्थ को चित्रित किया है। किसानों के सन्दर्भ में बात करते हुए कवि शब्द-चित्र बनाता है-

"पर यह सुबह सुहानी है कि उम्मीद बुझाती
ठीक-ठीक बताएँगे वे किसान
जो तार-तार धोती लपेटे मिर्जई अंटकाए
देखते हैं कभी खलिहान कभी बादल।"3

ग्रामीण जीवन जितना सुखदायी है, उतना ही दुःखदायी भी। जितेन्द्र श्रीवास्तव न केवल पहाड़

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ़्रीड रिसर्च जर्नल

का सौन्दर्य देखते हैं बल्कि पहाड़ी क्षेत्र में जीवन-यापन करने वाले लोगों के जीवन-संघर्ष भी उनके आँखों से ओझल नहीं होते हैं। वे पहाड़ों के सौन्दर्य को भी जानते हैं और उसकी मुश्किलों को भी जानते हैं-

"कितने सुन्दर हैं पहाड़
दूर से मैंने सोचा
कितने खुशनसीब हैं यहाँ के लोग
प्रकृति की गोद में रहते हैं
मैं भी आया बसने पहाड़
जीवन पहाड़ हो गया।"4

ग्रामीण जीवन बड़ा ही संघर्षमय बन जाता है, जब वह किसी पर्वतीय क्षेत्र में बसा हो। क्योंकि वहाँ उतनी सुविधाएँ नहीं मिलती जो जीवन-यापन हेतु अनिवार्य होती हैं। इन पर्वतीय क्षेत्रों में आवागमन की असुविधा के चलते पानी की समस्या ग्रामीणों में संकट पैदा करती है। जितेन्द श्रीवास्तव ने पहाड़ों में मीलों दूर से पानी सारते हुए महिलाओं को भी देखा है। कैसी विडंबना है-

"ये पहाड़ हैं नदियों के पिता
इनकी बेटियाँ सींच रही हैं मैदान
मैंदानों के मैदान
पर इनके घर में ही नही पानी।"5

समाज टूट रहा है, परिवार टूट रहा है। गाँव भी शहर के असर में बेअसर नहीं रहे। जितेन्द्र श्रीवास्तव संबंधों को बदलते संदर्भ में प्रकाशित करते हैं। वे गाँव-घर की नयी पुरानी यादों में जीते हैं। आज के जमाने में पिछड़ी समझी जाने वाली वस्तुएँ-पीढ़ा और कटोरी कवि को प्रिय हैं। इन वस्तुओं का महत्व इसलिए भी इनकी कविताओं में बढ़ जाता है, क्योंकि ये एक बड़ा प्रतीक रचती हैं। इनकी कविताओं में एक कसक दिखाई देती है। उन सबके लिए जो कि बीत चुका है और अब सपना होकर रह गया। एक समय था जबकि वस्तुओं के साथ मनुष्य का भावनात्मक संबंध हुआ करता था, क्योंकि 'उस्ताद' कारीगर पूर्णरूपेण किसी वस्तु को निर्मित करके सन्तोष प्राप्त करता था, लेकिन आज कोई भी श्रमिक किसी उत्पाद को देखकर यह दावा नहीं कर सकता कि अमुक उसकी निर्मित है। विभिन्न वस्तुओं के भिन्न-भिन्न भाग अलग-अलग मजदूरों द्वारा अलग-अलग मशीनों के माध्यम से तैयार किए जाते हैं और फिर सभी को एक साथ जोड़कर वस्तु का निर्माण किया जाता है। श्रमिक उतना ही श्रम करता है, लेकिन न उसे संतोष की प्राप्ति होती है और न ही उसके भाव वस्तु के साथ जुड़ पाते हैं। कवि के घर में बारजे पर पड़े पुराने पीढ़े पर माँ की उंगलियों के निशान अब भी होंगे जहाँ-तहाँ क्योंकि भले ही वह पीढ़ा बढ़ई ने बनाया हो, लेकिन उसको सहेजा-संभाला माँ ने ही था। इसमें माँ की बड़ी सारी यादें जुड़ी हैं दादी का जन्म, भइया का जन्म और पिता की यादें आदि। यह पीढ़ा माँ के लिए महज लकड़ी का टुकड़ा नहीं

"अपितु उनकी माँ प्रिय किताब है-
इस पीढे को बनाया था बढ़ई ने....
लड़की ओल्ली मियाँ के घर से आयी थी....
दीदी का जन्म, भइया का जन्म, बासठ की लड़ाई...
यह पीढ़ा महज़ लकड़ी का टुकड़ा नहीं
मेरी सबसे प्रिय किताब है।"6

इस पीढ़े को बनाने के लिए "लकड़ी ओल्ली मियाँ के घर से आई थी।" ओल्ली मियाँ कहने से एक अपनत्व का बोध होता है जबकि वह एक लकड़ी विक्रेता थे। कवि की स्मृति में एक विक्रेता का इस कदर शामिल होना बताता है कि यहाँ संबंधों की ऊष्मा व्याप्त थी वहीं आज घर में भी बाजार शामिल हो गया है। संबंधों की मजबूती को

मापने का पैमाना 'गिफ्ट का ब्राण्ड।' लोक येन केन प्रकारेण ब्रांडेड चीजें लेना चाहते हैं और 'लालसाओं की पालकी' उन्हें एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ी करती है जहाँ से पीछे लौटने के रास्ते बन्द दिखाई देते हैं।

भूमण्डलीकरण की लहर ने ग्रामीण जीवन की पद्धति व परम्परा को बदलने में अहम भूमिका निभाई है। लोक जीवन जिस तरह तेजी से विघटित हो रहा है उसके प्रति कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की व्याकुलता मगहर पर लिखी उनकी कविता के एक अंश में देख सकते है-

"ट्रेन छूट रही है मगहर स्टेशन से
बिल्कुल साफ दीख रही है
कबीर की याद में बनी मस्जित
दीख रहा मंदिर
कांप रहा है आमी का जल
और अब पीछे छूट रही है
स्टेशन की दिवारों पर अंकित कबीर-वाणी।"7

कवि जितेन्द्र अपने काव्य विषय ग्रामीण जीवन से उठाते हैं और कविता में जीवंत कर देते हैं। इस क्रम में कुदाल, बंसुला, खुरपी, बैल, खेलावन अहीर, जैसी कविताएँ देखी जा सकती हैं। इन कविताओं में उनकी लोकचिंता व्यक्त हुई है। इस संक्रमण काल में लोक जीवन की चीजें विस्थापित हो रही हैं और विकल्प के रूप में जो उपभोक्तावादी संस्कृति आ रही है वह जीवन के उत्स सुखा दे रही है किसी कवि के लिए यह कवि के लिए गहरी चिंता का विषय है-

"खेत की मेंड़ पर खड़ी कुदाल
सोच रही है
और लोग चिंचित हैं
कि कुदाल सोच रही है।"8

ग्रामीण जीवन में उन वस्तुओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है, जिन वस्तुओं के उपयोग से वे अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं, अपना जीवन-यापन चलाते हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य में 'खुरपी' ग्रामीण जीवन के लिए बहुत जरूरी औजार है। इसके बिना किसान का काम नहीं चल सकता। इसलिए गाँव में लोग खुरपी को बहुत जतन, रतन और साँसो की तरह रखते हैं-

"खुरपी जरूरी औजार है
गाँव में जीवन का....
गाँवों में लोग रखते हैं
खुरपी को बहुत जतन से
रतन की तरह
साँसों की तरह।"9

प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विकास के कारण अनेक कृषि यंत्रों का आविष्कार हुआ। इस विकास ने ग्रामीण जीवन को भी प्रभावित किया हैं। कृषि के अनेक नवीन यंत्रों के उपयोग ने ग्रामीण जीवन की पुरानी कृषि पद्धति को बदल दिया है। परम्परागत उपकरणों का उपयोग कम होने लगा है। पहले खेत की जुताई करने हेतु एक फाल वाले हल का उपयोग होता था, जिन्हें एक जोड़ी बैल खींचते थे। अब खेती में बैलो का उपयोग न के बराबर हो रहा है। मनुष्य की दुनिया का कर्म क्षेत्र उपयोगी भी हो सकता है और नहीं भी। किन्तु जितेन्द्र श्रीवास्तव बैलों की उपयोगिता को उपयोगी सिद्ध करते हुए कहते हैं-

"वे बैल जो हल से चीर सकते हैं धरती का कलेजा
ढो सकते हैं सामान बैल गाड़ी में नधकर
अब साबित हो गए हैं पिछड़े
आदमियों की इस दुनिया में
अक्सर होते हैं
नए शोध उपयोगिता पर
लेकिन बैलों की दुनिया में
शायद यह पहला शोध है

कि बैल सन्तोष कर सकते हैं
कि बैल कम नहीं करते
बैलों की उपयोगिता।"10

गाँवों में लोग दैनिक जीवन में कई महत्वपूर्ण औजरों का उपयोग करते हैं। इसके बिना उनके अनेक कृषि के कार्यों में बाधाएँ आती हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य में एक अत्यंत उपयोगी औजार है-'बँसुला'। ग्रामीण जीवन में वह बिना कोई भेद-भाव किये अनेक उपयोगी कार्य करता है। यदि वह लकड़ी के लिए ईश्वर का रूप है, तो बढ़ई के लिए हाथ है-

"पल्ला गढ़ना हो जुआठ गढ़ना हो
गोड़ा गढ़ना हो पलँग गढ़ना हो
पालना गढ़ना हो चाहे बँसखटिया
कोई भेद नहीं करता बँसुला
बँसुला ईश्वर है काठ का
हाथ है बढ़ई का।"11

बदलते हुए समाज और परिवेश के अनेक चित्र कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में देखने को मिलते हैं। कवि के पास गाँव, परिवार की स्मृतियों की ऐसी धरोहर है कि वे इस भागते समय में अपने कदमों को जमीन पर जमाये हुए इस नजारे को देखते और आगाह करते जाते हैं। 'कायांतरण' कविता में बड़े फलक पर इसे व्यक्त किया गया है। तेजी से बदलते समय के दबाव और उससे तार-तार हो रहे मानव-सम्बन्धों को व्यक्त करने के साथ ही जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताएँ बड़े संयमित ढंग से उस साधारण मनुष्य की असुरक्षित और अस्थिर हो गई जिंदगी के चित्र भी प्रस्तुत करती है। ग्रामीण जीवन में तीव्र गति से बदलाव आया है। आस्था और विश्वास, प्रेम और सहानुभूति जैसे मानवीय गुणों की होली जलाई जा रही है। फिर भी कवि एक ऐसे गाँव जाना चाहता है, जहाँ जीवन का उत्सव है, आँखों में पानी है, लाज का रंग है, त्योहारों पर मेले लगते हैं-

"चलो सुलेखा तुम्हारे साथ चलूँ एक ऐसे गाँव
जहाँ अब भी बचा है उत्सव जीवन का
जहाँ बचा है अभी आँखों में पानी
जहाँ रंग नहीं उतरा है लाज का
चलो उस गाँव चलें
जहाँ जब भी मिलें धधाकर मिलते हैं लोग
जहाँ अब भी त्योहारों पर लगते हैं मेले।"12

आधुनिक प्रौद्योगिकी के चलते गाँव और शहरों के छोटे-छोटे उद्योगों का चलन समाप्त हुआ है, वहीं खेती भी केवल घाटे का सौदा बनकर रह गई है इसीलिए गाँव तथा छोटे शहरों से बड़े शहरों की तरफ लोगो का पलायन हुआ है। बड़े पैमाने पर होने वाले इस विस्थापन ने अधूरेपन के एहसास को तीव्र किया है। जितेन्द्र श्रीवास्तव की कई कविताओं में इस अधूरेपन को रेखांकित किया गया है। 'रामबचन भगत' दिल्ली में सब्जी बेचकर जीविका चलाने वाला, अपनी जड़ों से उखड़ा हुआ वह आदमी है जो अपनी गँवई भाषा को किसी भी किमत पर भूलने को तैयार नहीं है। वह आत्माभिमान के साथ कहता है-

"दुनिया सिर्फ कुछ लोगों के लिए नहीं बनी है
यहाँ सबको हक है जीने का
अपनी भाषा
अपनी बोली
और अपनी श्रम की आजादी के साथ।"13

यह सशक्त प्रतिरोध है एक शक्तिशाली व्यवस्था के खिलाफ अदना से आदमी रामबचन भगत और स्वयं कवि का भी, क्योंकि प्रायोजित सांस्कृतिक एकरूपता इन्हें स्वीकार नहीं। कवि और रामबचन दोनों के गाँव सलामत हैं, खेत सलामत हैं, और भाई बन्धु भी सलामत हैं, लेकिन फिर भी 'गाँव से उजड़कर' दिल्ली जाना पड़ता है।

आज यह केवल कवि या रामबचन भगत की नहीं अपितु हर तीसरे-चौथे आदमी की नियति है और इस विस्थापन का संबंध इच्छा से नहीं, जरूरत से है, शौक से नहीं, मजबूरी से है। रोजी-रोटी व जीविका के लिए कवि को यदि 'जाना पड़ता चाँद पर तो वहाँ भी चला जाता। लेकिन विडम्बना यह है कि किसी दूसरे ठौर रोजगार की सुरक्षा मिलने के बावजूद पूर्णता व अपनत्व के बोध का अभाव रहता है।

निष्कर्ष

जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताएँ ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों का चित्रण करने में सक्षम हैं। कविता के माध्यम से पाठक ग्रामीण जीवन के विविध आयामों से रूबरु होता है। जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य में ग्रामीण जीवन के विभिन्न उपयोगी 'औजार' है, जिनका उपयोग गाँव के मजदूर, किसान, महिलाएँ आदि अपने दैनिक जीवन में करते हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव से ग्रामीण जीवन में जो विभिन्न बदलाव हुए है, और हो रहे हैं। उन सभी परिवर्तनों का चित्रण जितेन्द्र श्रीवास्तव के काव्य में उपस्थित हुआ हैं। ग्रामीण जीवन का शहरी जीवन में बदलना कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव के लिए चिंता का विषय है, चूंकि वे गाँवों में लोगो की नष्ट होती संवेदना को नहीं देखना चाहते हैं, वे एक ऐसे गाँव जाना चाहते हैं, जहाँ जीवन का उत्सव है, आँखों में पानी है, लाज का रंग है, त्योहारों पर मेले लगते हैं। जितेन्द्र श्रीवास्तव सभी मानवीय गुणों को बचाना चाहते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, कायांतरण, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2012, पृ. 51*
2. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, असुन्दर सुन्दर, प्रथम संस्करण, नयी दिल्ली, 2008, पृ.94*
3. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, अनभै कथा, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2003, पृ. 99*
4. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, अनभै कथा, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2003, पृ. 51*
5. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, अनभै कथा, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2003, पृ. 51*
6. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, असुन्दर सुन्दर, प्रथम संस्करण, नयी दिल्ली, 2008, पृ. 34*
7. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, अनभै कथा, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2003, पृ. 96*
8. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, अनभै कथा, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2003, पृ. 128*
9. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, अनभै कथा, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2003, पृ. 43-44*
10. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, अनभै कथा, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2003, पृ. 45-46*
11. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, अनभै कथा, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2003, पृ. 42*
12. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, बिल्कुल तुम्हारी तरह, प्रथम संस्करण, 2011, पृ. 36*
13. *श्रीवास्तव, जितेन्द्र, असुन्दर सुन्दर, प्रथम संस्करण, नयी दिल्ली, 2008, पृ. 113*